चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| | 26.7.25 | 1 | 1–4 |

The Tribune

# Hisar farm varsity scientists identify new disease hitting strawberry crop

TRIBUNE NEWS SERVICE

**Claim to have identified a new pathogen Colletotrichum nymphaeae responsible for the deadly crown rot disease in strawberries**

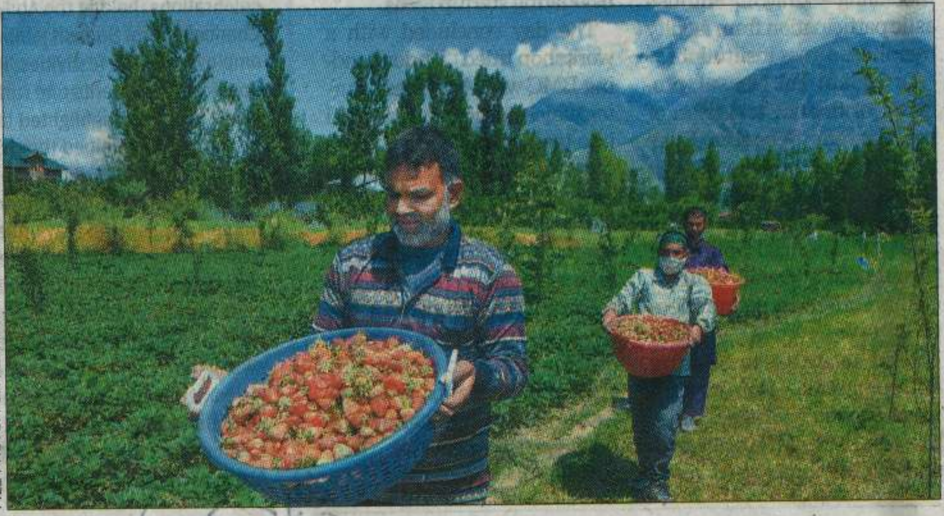

FILE PHOTO. FOR REPRESENTATIONAL PURPOSE ONLY

HISAR, JULY 25

Agriculture scientists from Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University (HAU) Hisar, claimed to have identified a new pathogen Colletotrichum nymphaeae responsible for the deadly crown rot disease in strawberries. This marks the first time the pathogen has been identified in the country, they claim.

This disease has previously caused significant damage to strawberry crops, with an estimated loss of 20-22 per cent last year alone. Vice-Chancellor Prof BR Kamboj has asked the scientists to begin work on managing the disease hoping that effective solutions will soon be developed.

A university spokesperson said the international publishing house Elsevier, renowned for its academic and scientific journal, has recognised the discovery. The findings were published in Physiological and Molecular Plant Pathology, a prestigious journal known for acknowledging new plant diseases globally. The journal is a platform for research in plant diseases, and HAU scientists are now the first researchers in India to report this disease, he said.

Prof Kamboj congratulated the scientists on the achievement and emphasised the importance of timely recognition of emerging threats in agriculture. He urged the team to focus on strict monitoring of the disease's spread and to work quickly on developing effective control measures.

Scientists with HAU VC Prof BR Kamboj after their successful identification of the new strawberry disease. TRIBUNE PHOTO

Dr Rajbir Garg, the Director of Research, said Hisar had become a major strawberry farming hub in Northern India, with around 700 acres dedicated to strawberry cultivation in Syahadwa and adjoining villages. He informed that the crown rot disease caused significant damage to the crops in the region. The strawberries from Syahadwa village in Hisar are now sought after internationally, with farmers in nearby villages like Chanana, Harita, and Miran also taking up strawberry farming inspired by the success of Syahadwa's farmers.

The university's efforts to introduce strawberry farming in the region back in 1996 have laid the foundation for a successful strawberry cluster in Hisar. However, biological factors, including crown rot, remain a significant concern. Dr Aadesh Kumar, the lead researcher on crown rot, explained that the scientists are actively working on targeted measures to understand the disease's spread and mitigate its impact on strawberry production.

The university spokesperson said the research was a collaborative effort by the university's scientific team, including Anil Kumar Saini, Sushil Sharma, Rakesh Gehlot, Anil Kumar, Rakesh Kumar, Rajesh Kumar, Vikas Kumar Sharma, Romi Rawal, RPS Dalal, and PhD student Shubham Saini.

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| | 26.7.25 | 5 | 1-2 |

जागरण

# विज्ञानियों ने पहली बार की स्ट्राबेरी की क्राउन राट बीमारी की पहचान

हिसार के हकृवि में कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज के साथ वैज्ञानिक।

जागरण संवाददाता, हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के विज्ञानियों ने स्ट्राबेरी फल के लिए घातक क्राउन राट रोग के नए रोग कारक कोलेटोट्रीकम निम्फेई की पहचान की है। देश में पहली बार स्ट्राबेरी के क्राउन राट रोग के लिए नए रोग कारक का पता चला है। इस बीमारी से पिछले वर्ष 20 से 22 प्रतिशत तक फसल को नुकसान हुआ था। उत्तर भारत में हिसार स्ट्राबेरी का एक बड़ा कल्स्टर है, जहां करीब 700 एकड़ में स्ट्राबेरी की फार्मिंग हो रही है। इस रोग का पता चलने के बाद किसानों को लाभ होगा। हकृवि के विज्ञानी देश में इस बीमारी की खोज करने वाले सबसे पहले विज्ञानी हैं। इन विज्ञानियों ने स्ट्राबेरी के क्राउन राट रोग पर शोध रिपोर्ट प्रस्तुत की है जिसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर संस्था ने मान्यता प्रदान करते हुए अपने जर्नल में प्रकाशन के लिए स्वीकार किया है।

हिसार के गांव स्याहड़वा में किसान स्ट्राबेरी की खेती करते हैं। यहां की स्ट्राबेरी विदेश तक जाती है। स्ट्राबेरी की मांग बढ़ने और किसानों का मुनाफा बढ़ने के साथ ही आसपास के तीन गांव चनाना, हरिता व मिरान के किसान भी स्याहड़वा से प्रेरित होकर स्ट्राबेरी की खेती कर रहे हैं। जिले में स्ट्राबेरी की शुरूआत होने के बाद 1996 में हकृवि के विज्ञानियों ने क्लस्टर की शुरूआत की थी। अनुसंधान निदेशक डा. राजबीर गर्ग ने बताया कि इस फल की सफल खेती

> बदलते कृषि परिदृश्य में विभिन्न फसलों में उभरते खतरों की समय पर पहचान महत्वपूर्ण हो गई है। विज्ञानियों से बीमारी के प्रकोप पर कड़ी निगरानी व रोग नियंत्रण पर जल्द से जल्द काम शुरू करने को कहा। इस रोग के प्रबंधन के लिए कार्य शुरू कर दिया है। वैज्ञानिकों को उम्मीद है कि वे जल्द ही इस दिशा में भी कामयाब होंगे। - **प्रो. बीआर काम्बोज**, कुलपति, हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय

अक्सर विभिन्न जैविक कारकों से बाधित होती है, जिनमें से क्राउन राट बड़ी चिंता का विषय है। यह खोज स्ट्राबेरी की खेती की सुरक्षा के लिए निगरानी और मजबूत प्रबंधन रणनीतियों की तत्काल आवश्यकता को रेखांकित करती है। क्राउन राट रोग के मुख्य शोधकर्ता डा. आदेश कुमार ने बताया कि शोधकर्ता इस बीमारी के प्रकोप को समझने और इसके प्रभाव को कम करने के लिए लक्षित उपाय विकसित करने में जुटे हैं। इससे स्ट्राबेरी उत्पादन की सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके। विश्वविद्यालय के विज्ञानी अनिल कुमार सैनी, सुशील शर्मा, राकेश गहलोत, अनिल कुमार, राकेश कुमार, केसी राजेश कुमार, विकास कुमार शर्मा, रोमी रावल, आरपीएस दलाल व पीएचडी छात्र शुभम सैनी ने भी इस शोधकार्य में योगदान दिया। एल्सेवियर एक डच शैक्षणिक प्रकाशन संस्था है। इसकी नास रेटिंग 8.8 है। यह विज्ञानी तकनीक और चिकित्सा सामग्री में विशेषज्ञता रखती है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| दैनिक भास्कर | 26.7.25 | 4 | 1-4 |

**उपलब्धि** • कुलपति के दिशा निर्देशानुसार वैज्ञानिकों ने स्ट्रॉबेरी के नए रोग के प्रबंधन पर किया काम शुरू

# हकृवि वैज्ञानिकों ने की स्ट्रॉबेरी की क्राउन रॉट बीमारी की पहचान, अंतरराष्ट्रीय एल्सेवियर प्रकाशन से मिली मान्यता

भास्कर न्यूज | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने स्ट्रॉबेरी फल के लिए घातक क्राउन रॉट रोग के एक नए रोग कारक कोलेटोट्रीकम निम्फेई की पहचान की है। देश में पहली बार स्ट्रॉबेरी के क्राउन रॉट रोग के लिए नए रोग कारक का पता चला है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज के निर्देशानुसार वैज्ञानिकों ने इस रोग के प्रबंधन के लिए कार्य शुरू कर दिया है। वैज्ञानिकों को उम्मीद है कि वे जल्द ही इस दिशा में भी कामयाब होंगे।

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज के साथ वैज्ञानिक

**अंतरराष्ट्रीय प्रकाशन ने दी बीमारी को मान्यता, एचएयू के वैज्ञानिक हैं पहले शोधकर्ता** एल्सेवियर एक डच शैक्षणिक प्रकाशन संस्था है जिसकी नास रेटिंग 8.8 है जो वैज्ञानिक, तकनीक और चिकित्सा सामग्री में विशेषज्ञता रखती है। इसमें प्रकाशित फिजियोंलोजिकल एंड मोलिकुलर प्लांट पैथोलोजी में वैज्ञानिकों ने इस बीमारी की रिपोर्ट को प्रथम शोध रिपोर्ट के रूप में प्रकाशन हेतु स्वीकार कर मान्यता दी है जो विशेषत: पौधों की बीमारियों के लिए पौधों में नई बीमारी को मान्यता देने वाली, अध्ययन के लिए सबसे पुराने अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक संगठनों में से एक है। यह शैक्षणिक संस्था विशेषत: पौधों की बीमारियों पर विश्वस्तरीय प्रकाशन प्रकाशित करती है।

हकृवि के वैज्ञानिक देश में इस बीमारी की खोज करने वाले सबसे पहले वैज्ञानिक हैं। इन वैज्ञानिकों ने स्ट्रॉबेरी के क्राउन रॉट रोग पर शोध रिपोर्ट प्रस्तुत की है जिसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर संस्था ने मान्यता प्रदान करते हुए अपने जर्नल में प्रकाशन के लिए स्वीकार किया है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| पंजाब केसरी | 26.7.25 | 6 | 1-5 |

# हकृवि के वैज्ञानिकों ने पहली बार की स्ट्रॉबेरी की क्राऊन रॉट बीमारी की पहचान, बने देश के पहले शोधकर्त्ता

**इस रोग से पिछले वर्ष लगभग 20-22 प्रतिशत तक की हुई थी हानि**

हिसार, 25 जुलाई (राठी): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (हकृवि) के वैज्ञानिकों ने स्ट्रॉबेरी फल के लिए घातक क्राऊन रॉट रोग के एक नए रोग कारक कोलेटोट्रीकम निम्फेई की पहचान की है। देश में पहली बार स्ट्रॉबेरी के क्राऊन रॉट रोग के लिए नए रोग़ कारक का पता चला है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज के निर्देशानुसार वैज्ञानिकों ने इस रोग के प्रबंधन के लिए कार्य शुरू कर दिया है। वैज्ञानिकों की उम्मीद है कि वे जल्द ही इस दिशा में भी कामयाब होंगे।

ऐल्सेवियर एक डच शैक्षणिक प्रकाशन संस्था है जिसकी नास रेटिंग 8-8 है जो वैज्ञानिक, तकनीक और चिकित्सा सामग्री में विशेषज्ञता रखती है। इसमें प्रकाशित फिजियोलॉजिकल एंड मॉलीक्यूलर प्लांट पैथोलॉजी में वैज्ञानिकों ने इस बीमारी की रिपोर्ट को प्रथम शोध रिपोर्ट के रूप में प्रकाशन के लिए स्वीकार कर मान्यता दी है, जो विशेषत: पौधों की बीमारियों के लिए पौधों में नई बीमारी को मान्यता देने वाली, अध्ययन के लिए सबसे पुराने अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगठनों में से एक है। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक देश में इस बीमारी की खोज करने वाले सबसे पहले वैज्ञानिक हैं। इन

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज के साथ वैज्ञानिक।

वैज्ञानिकों ने स्ट्रॉबेरी के क्राऊन रॉट रोग पर शोध रिपोर्ट प्रस्तुत की है जिसे अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर संस्था ने मान्यता प्रदान करते हुए अपने जर्नल में प्रकाशन के लिए स्वीकार किया है। विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों अनिल कुमार सैनी, सुशील शर्मा, राकेश गहलोत, अनिल कुमार, राकेश कुमार, के.सी. राजेश कुमार, विकास कुमार शर्मा, रोमी रावल, आर.पी.एस. दलाल व पीएच.डी. छात्र शुभम सैनी ने इस शोधकार्य में योगदान दिया।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने वैज्ञानिकों को इस खोज के लिए बधाई दी। उन्होंने कहा कि बदलते कृषि परिदृश्य में विभिन्न फसलों में उभरते खतरों की समय पर पहचान महत्वपूर्ण हो गई है। उन्होंने वैज्ञानिकों से बीमारी के प्रकोप पर कड़ी निगरानी व रोग नियंत्रण पर जल्द से जल्द काम शुरू करने को कहा।

**स्ट्रॉबेरी के लिए हिसार उत्तरी भारत का बहुत बड़ा क्लस्टर, 700 एकड़ में होती है खेती:** अनुसंधान निदेशक डा. राजबीर गर्ग ने बताया कि स्ट्रॉबेरी के लिए हिसार उत्तरी भारत का बहुत बड़ा क्लस्टर बन चुका है, जहां करीब 700 एकड़ में स्ट्रॉबेरी फार्मिंग होती है। इस रोग कारक द्वारा स्ट्रॉबेरी में पिछले वर्ष लगभग 20-22 प्रतिशत तक की हानि हुई थी। हिसार के गांव स्याहड़वा की स्ट्रॉबेरी का स्वाद विदेशों में चखा जा रहा है। आसपास के 3 गांव चनाना, हरिता व मिरान के किसान भी स्याहड़वा से प्रेरित होकर स्ट्रॉबेरी की खेती कर रहे हैं। हिसार जिले में स्ट्रॉबेरी क्लस्टर की शुरूआत 1996 में हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने की थी। क्राऊन रॉट रोग के मुख्य शोधकर्त्ता डा. आदेश कुमार ने बताया कि शोधकर्त्ता इस बीमारी के प्रकोप को समझने और इसके प्रभाव को कम करने के लिए लक्षित उपाय विकसित करने में जुटे हुए हैं, जिससे स्ट्रॉबेरी उत्पादन की सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके।

हिसार में स्ट्रॉबेरी का खेत।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
| --- | --- | --- | --- |
| अमर उजाला | 26.7.25 | 7 | 1-3 |

अमर उजाला

# क्यों सड़ रही हैं स्ट्रॉबेरी की जड़ें वैज्ञानिकों ने खोज निकाला कारण

## पिछले वर्ष क्राउन रॉट से 20 से 22% तक घटा था स्ट्रॉबेरी का उत्पादन

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) हिसार के वैज्ञानिकों ने स्ट्रॉबेरी को प्रभावित करने वाले क्राउन रॉट रोग के एक नए रोग कारक 'कोलेटोट्रीकम निम्फेई' की पहचान की है। यह खोज देश में पहली बार दर्ज की गई है और इसे प्रकाशन संस्था एल्सेवियर ने अपने अंतरराष्ट्रीय जर्नल फिजियोलॉजिकल एंड मोलिकुलर प्लांट पैथोलॉजी में प्रथम शोध रिपोर्ट के रूप में प्रकाशित करने की स्वीकृति दी है।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर कांबोज के निर्देशन में वैज्ञानिकों की टीम ने इस रोग की पहचान कर उसके प्रबंधन की दिशा में कार्य आरंभ कर दिया है।

अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग के अनुसार हिसार उत्तरी भारत का प्रमुख स्ट्रॉबेरी उत्पादक क्षेत्र बन चुका है, जहां लगभग 700 एकड़ में स्ट्रॉबेरी की खेती होती है।

हिसार। कुलपति प्रो. काम्बोज के साथ वैज्ञानिक प्रतिनिधि मंडल। स्रोत: संस्था

पिछले वर्ष इस रोग के कारण लगभग 20 से 22 फीसदी तक फसल की क्षति हुई थी। यह रोग विशेष रूप से गांव स्याहड़वा, चनाना, हरिता और मिरान जैसे क्षेत्रों में देखा गया है।

मुख्य शोधकर्ता डॉ. आदेश कुमार ने बताया कि कोलेटोट्रीकम निम्फेई के कारण फैलने वाला क्राउन रॉट रोग स्ट्रॉबेरी की जड़ों और तनों को संक्रमित करता है जिससे पौधों की वृद्धि रुक जाती है और उत्पादन पर विपरीत प्रभाव पड़ता है।

वैज्ञानिक टीम इस रोग के नियंत्रण के लिए प्रभावी रणनीतियों के विकास में जुटी हुई है। इस शोध में डॉ. अनिल कुमार सैनी, डॉ. सुशील शर्मा, डॉ. राकेश गहलोत, डॉ. अनिल कुमार, डॉ. राकेश कुमार, डॉ. केसी राजेश कुमार, डॉ. विकास कुमार शर्मा, डॉ. रोमी रावल, डॉ. आरपीएस दलाल व पीएचडी छात्र शुभम सैनी ने योगदान दिया है। ब्यूरो

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| हरि. भूमि | 26.7.25 | 11 | 2-5 |

## अंतरराष्ट्रीय स्तर के एल्सेवियर प्रकाशन ने दी बीमारी को मान्यता

# हकृवि वैज्ञानिकों ने पहली बार की स्ट्रॉबेरी की क्राउन रॉट बीमारी की पहचान

**वैज्ञानिकों को उम्मीद है कि वे जल्द ही इस दिशा में भी कामयाब होंगे: कुलपति**

हरिभूमि न्यूज ⏭ हिसार

हरियाणा कृषि व्रिश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने स्ट्रॉबेरी फल के लिए घातक क्राउन रॉट रोग के एक नए रोग कारक कोलेटोट्रीकम निम्फेई की पहचान की है। देश में पहली बार स्ट्रॉबेरी के क्राउन रॉट रोग के लिए नए रोग कारक का पता चला है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज के निर्देशानुसार वैज्ञानिकों ने इस रोग के प्रबंधन के लिए कार्य शुरू कर दिया हैं। वैज्ञानिकों को उम्मीद है कि वे जल्द ही इस दिशा में भी कामयाब होंगे।

हिसार। कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज के साथ वैज्ञानिक। .फोटो: हरिभूमि

### अंतरराष्ट्रीय प्रकाशन ने दी बीमारी को मान्यता

एल्सेवियर एक डच शैक्षणिक प्रकाशन संस्था है जिसकी नास रेटिंग 8.8 है जो वैज्ञानिक, तकनीक और चिकित्सा सामग्री में विशेषज्ञता रखती है। इसमें प्रकाशित फिजियोलोजिकल एंड मोलिकुलर प्लांट पैथोलोजी में वैज्ञानिकों ने इस बीमारी की रिपोर्ट को प्रथम शोध रिपोर्ट के रूप में प्रकाशन के लिए स्वीकार कर मान्यता दी है, जो विशेषतः पौधों की बीमारियों के लिए पौधों में नई बीमारी को मान्यता देने वाली, अध्ययन के लिए सबसे पुराने अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक संगठनों में से एक है। यह शैक्षणिक संस्था विशेषतः पौधों की बीमारियों पर विश्वस्तरीय प्रकाशन प्रकाशित करती है।

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक देश में इस बीमारी की खोज करने वाले सबसे पहले वैज्ञानिक हैं। इन वैज्ञानिकों ने स्ट्रॉबेरी के क्राउन रॉट रोग पर शोध रिपोर्ट प्रस्तुत की है जिसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर संस्था ने मान्यता प्रदान करते हुए अपने जर्नल में प्रकाशन के लिए स्वीकार किया है।

### निगरानी व रोग नियंत्रण पर जल्द काम शुरू करें

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर कम्बोज ने वैज्ञानिकों को इस खोज के लिए बधाई दी। प्रो. कम्बोज ने कहा कि बदलते कृषि परिदृश्य में विभिन्न फसलों में उभरते खतरों की समय पर पहचान महत्वपूर्ण हो गई है। उन्होंने वैज्ञानिकों से बीमारी के प्रकोप पर कड़ी निगरानी व रोग नियंत्रण पर जल्द से जल्द काम शुरू करने को कहा।

### इन वैज्ञानिकों का रहा अहम योगदान

अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि स्ट्रॉबेरी के लिए हिसार उत्तरी भारत का बहुत बड़ा क्लस्टर बन चुका हैं, जहां करीब 700 एकड़ में स्ट्रॉबेरी फार्मिंग होती है। इस रोग कारक के द्वारा स्ट्रॉबेरी में पिछले वर्ष लगभग 20-22 प्रतिशत तक की हानि हुई थी। हिसार के गांव स्याहड़वा की स्ट्रॉबेरी का स्वाद विदेशों में चखा जा रहा है। आसपास के तीन गांव चनाना, हरिता व भिरान के किसान भी स्याहड़वा से प्रेरित होकर स्ट्रॉबेरी की खेती कर रहे हैं। हिसार जिले में स्ट्रॉबेरी क्लस्टर की शुरुआत 1996 में हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने की थी। इस फल की सफल खेती अक्सर विभिन्न जैविक कारकों से बाधित होती हैं, जिनमें से क्राउन रॉट बड़ी चिंता का विषय है। क्राउन रॉट रोग के मुख्य शोधकर्ता डॉ. आदेश कुमार ने बताया कि शोधकर्ता इस बीमारी के प्रकोप को समझने और इसके प्रभाव को कम करने के लिए लक्षित उपाय विकसित करने में जुटे हुए हैं, जिससे स्ट्रॉबेरी उत्पादन की सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके। विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों अनिल कुमार सैनी, सुशील शर्मा, राकेश गहलोत, अनिल कुमार, राकेश कुमार, केसी राजेश कुमार, विकास कुमार शर्मा, रोमी रावल, आरपीएस दलाल व पीएचडी छात्र शुभम सैनी ने भी इस शोधकार्य में योगदान दिया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| अजीत समाचार | 26.7.25 | 5 | 2-5 |

# हकृवि वैज्ञानिकों ने पहली बार की स्ट्रॉबेरी की क्राउन रॉट बीमारी की पहचान

हिसार, 25 जुलाई (विरेन्द्र वर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने स्ट्रॉबेरी फल के लिए घातक क्राउन रॉट रोग के एक नए रोग कारक कोलेटोट्रीकम निम्फेई की पहचान की है। देश में पहली बार स्ट्रॉबेरी के क्राउन रॉट रोग के लिए नए रोग कारक का पता चला है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज के निर्देशानुसार वैज्ञानिकों ने इस रोग के प्रबंधन के लिए कार्य शुरू कर दिया हैं। वैज्ञानिकों को उम्मीद है कि वे जल्द ही इस दिशा में भी कामयाब होंगे। एल्सेवियर एक डच शैक्षणिक प्रकाशन संस्था है जिसकी नास रेटिंग 8.8 हैं जो वैज्ञानिक, तकनीक और चिकित्सा सामग्री में विशेषज्ञता रखती है। इसमें प्रकाशित फिजियोंलोजिकल एंड मोलिकुलर प्लांट पैथोलोजी में वैज्ञानिकों ने इस बीमारी की रिपोर्ट को प्रथम शोध रिपोर्ट के रूप में प्रकाशन हेतु स्वीकार कर मान्यता दी है, जो विशेषत: पौधों की बीमारियों के लिए पौधों में नई बीमारी को मान्यता देने वाली, अध्ययन के लिए सबसे पुराने अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगठनों में से एक है। यह शैक्षणिक

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज के साथ वैज्ञानिक।

संस्था विशेषत: पौधों की बीमारियों पर विश्वस्तरीय प्रकाशन प्रकाशित करती है। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक देश में इस बीमारी की खोज करने वाले सबसे पहले वैज्ञानिक हैं। इन वैज्ञानिकों ने स्ट्रॉबेरी के क्राउन रॉट रोग

*** अंतर्राष्ट्रीय स्तर के एल्सेवियर प्रकाशन ने दी बीमारी को मान्यता * इस रोग कारक के द्वारा स्ट्रॉबेरी में गत वर्ष लगभग 20-22 प्रतिशत तक की हानि हुई थी**

पर शोध रिपोर्ट प्रस्तुत की है जिसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर संस्था ने मान्यता प्रदान करते हुए अपने जर्नल में प्रकाशन के लिए स्वीकार किया है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने वैज्ञानिकों को इस खोज के लिए बधाई दी। प्रो. काम्बोज ने कहा कि बदलते कृषि परिदृश्य में विभिन्न फसलों में उभरते खतरों की समय पर पहचान महत्वपूर्ण हो गई है। उन्होंने वैज्ञानिकों से बीमारी के प्रकोप पर कड़ी निगरानी व रोग नियंत्रण पर जल्द से जल्द काम शुरू करने को कहा। अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि स्ट्रॉबेरी के लिए हिसार उत्तरी भारत का बहुत बड़ा क्लस्टर बन चुका है, जहां करीब 700 एकड़ में स्ट्रॉबेरी फार्मिंग होती है। इस रोग कारक के द्वारा स्ट्रॉबेरी में पिछले वर्ष लगभग 20-22 प्रतिशत तक की हानि हुई थी। हिसार के गांव स्याहड़वा की स्ट्रॉबेरी का स्वाद विदेशों में चखा जा रहा है। आसपास के तीन गांव चनाना, हरिता व मिरान के किसान भी स्याहड़वा से प्रेरित होकर स्ट्रॉबेरी की खेती कर रहे हैं। हिसार जिले में स्ट्रॉबेरी क्लस्टर की शुरुआत 1996 में हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने की थी। इस फल की सफल खेती अक्सर विभिन्न जैविक कारकों से बाधित होती है, जिनमें से क्राउन रॉट बड़ी चिंता का विषय है।

यह खोज स्ट्रॉबेरी की खेती की सुरक्षा के लिए निगरानी और मजबूत प्रबंधन रणनीतियों की तत्काल आवश्यकता को रेखांकित करती है। क्राउन रॉट रोग के मुख्य शोधकर्ता डॉ. आदेश कुमार ने बताया कि शोधकर्ता इस बीमारी के प्रकोप को समझने और इसके प्रभाव को कम करने के लिए लक्षित उपाय विकसित करने में जुटे हुए हैं, जिससे स्ट्रॉबेरी उत्पादन की सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके। विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों अनिल कुमार सैनी, सुशील शर्मा, राकेश गहलोत, अनिल कुमार, राकेश कुमार, के.सी. राजेश कुमार, विकास कुमार शर्मा, रोमी रावल, आर.पी.एस. दलाल व पीएचडी छात्र शुभम सैनी ने भी इस शोधकार्य में योगदान दिया।

| | |
|---|---|
| | चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय |

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| सिटी पल्स न्यूज | 25.7.2025 | -- | -- |

# एचएयू के वैज्ञानिकों ने पहली बार की स्ट्रॉबेरी क्राउन रॉट बीमारी की पहचान

**सिटी पल्स न्यूज, हिसार।** चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने स्ट्रॉबेरी फल के लिए घातक क्राउन रॉट रोग के एक नए रोग कारक कोलेटोट्रीकम निम्फेई की पहचान की है। देश में पहली बार स्ट्रॉबेरी के क्राउन रॉट रोग के लिए नए रोग कारक का पता चला है। एल्सेवियर एक डच शैक्षणिक प्रकाशन संस्था है जिसकी नास रेटिंग 8.8 है जो वैज्ञानिक, तकनीक और चिकित्सा सामग्री में विशेषज्ञता रखती है। इसमें प्रकाशित फिजियोलोजिकल एंड मोलिक्युलर प्लांट पैथोलोजी में वैज्ञानिकों ने इस बीमारी की रिपोर्ट को प्रथम शोध रिपोर्ट के रूप में प्रकाशन हेतु स्वीकार कर मान्यता दी है, जो विशेषतः पौधों की बीमारियों के लिए पौधों में नई बीमारी को मान्यता देने वाली, अध्ययन के लिए सबसे पुराने अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक संगठनों में से एक है।

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने वैज्ञानिकों को इस खोज के लिए बधाई दी। प्रो. काम्बोज ने कहा कि बदलते कृषि परिदृश्य में विभिन्न फसलों में उभरते खतरों की समय पर पहचान महत्वपूर्ण हो गई है। उन्होंने वैज्ञानिकों से बीमारी के प्रकोप पर कड़ी निगरानी व रोग नियंत्रण पर जल्द काम शुरू करने को कहा।

**इन वैज्ञानिकों का रहा अहम योगदान :** अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि स्ट्रॉबेरी के लिए हिसार उत्तरी भारत का बहुत बड़ा क्लस्टर बन चुका है, जहां करीब 700 एकड़ में स्ट्रॉबेरी फार्मिंग होती है। इस रोग कारक के द्वारा स्ट्रॉबेरी में पिछले वर्ष लगभग 20-22 प्रतिशत तक की हानि हुई थी। हिसार के गांव स्याहड़वा की स्ट्रॉबेरी का स्वाद विदेशों में चखा जा रहा है। आसपास के तीन गांव चनाना, हरिता व मिरान के किसान भी स्याहड़वा से प्रेरित होकर स्ट्रॉबेरी की खेती कर रहे हैं। क्राउन रॉट रोग के मुख्य शोधकर्ता डॉ. आदेश कुमार ने बताया कि शोधकर्ता इस बीमारी के प्रकोप को समझने और इसके प्रभाव को कम करने के लिए लक्षित उपाय विकसित करने में जुटे हुए हैं, जिससे स्ट्रॉबेरी उत्पादन की सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके। विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों अनिल कुमार सैनी, सुशील शर्मा, राकेश गहलोत, राकेश कुमार, के.सी. राजेश कुमार, विकास कुमार शर्मा, रोमी रावल, आर.पी.एस. दलाल व पीएचडी छात्र शुभम सैनी ने भी इस शोधकार्य में योगदान दिया।